International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 7, November-December 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की हिन्दी पत्रकारिता पर सुधिजनों के विचार

डॉ. नरेंद्र कुमार

प्राध्यापक हिन्दी, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पिपलथा, जींद

शोध आलेख सार

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी पत्रकार भी है और साहित्यकार भी। उनकी पत्रकारिता पर जब हम दृष्टिपात करते है तब पाते हैं कि उनका पत्रकारवाला व्यक्तित्व काफी सतर्क है। पत्रिका की साज - सज्जा से लेकर सुंदर तथा उपयोगी रचनाओं का चयन आदि महत्वपूर्ण बातें हैं द्विवेदी जी पत्रकार के रूप में अपने दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वाह करते हैं। वे रचनाकारों की रचनाओं की भाषा, शब्दावली, व्याकरण संबंधी त्रुटियों तथा दोषों का परिमार्जन तथा परिष्कार करते है। उसमें सुधार करते हैं उसे उपयोगी और पठनीय भी बनाते हैं। यह सब केवल उन रचनाओं में करते हैं जिनमें ऐसा करना संभव होता है। परन्तु, जिनमें संशोधन करना संभव नहीं होता है, जिन रचनाओं में उत्कृष्टता नहीं होती, उसे खुले तौर पर अस्वीकृत कर देने में भी वह नहीं हिचकते।

'पत्रकार 'से अभिप्राय होता है पत्र पत्रिकाओं (त्रैमासिक द्विमासिक, मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक, दैनिक आदि)का सम्पादन कार्य करने वाला और इस संपादन कार्य में सहयोग करने वाला उपसम्पादक, सह सम्पादक आदि। कहने का अभिप्रायः यह है कि पत्र - पत्रिकाओं को देखने वाला, दायित्व वहन करने वाला पत्रकार है।

'साहित्यकार 'साहित्य की रचना करता है और किसी भी विधा में कविता, कहानी, कथा साहित्य तथा उपन्यास, निर्बंध आदि लिखने के लिए स्वतंत्र होता है। व्यक्तिगत रूप से वह केवल अपनी रचनाओं को ही आकर्षक, पठनीय और

How to cite this paper: Dr. Narendra Kumar "Sudhijan's Views on Acharya Mahavir Prasad Dwivedi's Hindi Journalism" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-7, December 2022, pp.266-268, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd52302.pdf

IJTSRD52302

Copyright © 2022 by author (s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

लोकप्रिय बनाने का चिन्तन करता रहता है। साहित्यकार की जिम्मेदारी अपनी रचनाओं को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने में व्यक्तिगत होती है। अब चाहे पाठक पसंद करे या नहीं। यह दायित्व साहित्यकार अपने ऊपर ही लेता है। वह केवल अपनी रचनाओं के निखार और परिष्कार के बारे में मोचता परखता, निखारता एवं संशोधन करते है।

'साहित्यकार 'साहित्य की रचना करता है और किसी भी विधा में कविता, कहानी, कथा साहित्य तथा उपन्यास, निर्बंध आदि लिखने के लिए स्वतंत्र होता है। व्यक्तिगत रूप से वह केवल अपनी रचनाओं को ही आकर्षक, पठनीय और लोकप्रिय बनाने का चिन्तन करता रहता है। साहित्यकार की जिम्मेदारी अपनी रचनाओं को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने में व्यक्तिगत होती है। अब चाहे पाठक पसंद करे या नहीं। यह दायित्व साहित्यकार अपने ऊपर ही लेता है। वह केवल अपनी रचनाओं के निखार और परिष्कार के बारे में मोचता परखता, निखारता एवं संशोधन करते है।

'पत्रकार 'की स्थिति इससे बिल्कुल भिन्न है। पत्रकार का दायित्व सामूहिक है वह केवल सम्पूर्ण पाठक के हित का ध्यान रखने के लिए तत्पर रहता है। वह अकेले नहीं रहता है। उस पत्र या पत्रिका में अनेक रचनाकर प्रकाशित होते है। प्रकाशित सामग्री का चयन तथा स्थान निर्धारण पत्रकार की सबसे बड़ी जवाबदेही है। पत्र पत्रिका में अच्छी तथा उपयोगी सामग्री पढ़ने के लिए देना पत्रकार का दायित्व है।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी पत्रकार भी है और साहित्यकार भी। उनकी पत्रकारिता पर जब हम दृष्टिपात करते हैं तब पाते हैं कि उनका पत्रकारवाला व्यक्तित्व काफी सतर्क है। पत्रिका की साज - सज्जा से लेकर सुंदर तथा उपयोगी रचनाओं का चयन आदि महत्वपूर्ण बातें हैं द्विवेदी जी पत्रकार के रूप में अपने दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वाह करते हैं। वे रचनाकारों की रचनाओं की भाषा, शब्दावली, व्याकरण संबंधी त्रुटियों तथा दोषों का परिमार्जन तथा परिष्कार करते है। उसमें सुधार करते हैं उसे उपयोगी और पठनीय भी बनाते हैं। यह सब केवल उन रचनाओं में करते हैं जिनमें ऐसा करना संभव होता है। परन्तु, जिनमें संशोधन करना संभव नहीं होता है, जिन रचनाओं में उत्कृष्टता नहीं होती, उसे खुले तौर पर अस्वीकृत कर देने में भी वह नहीं हिचकते।

द्विवेदी जी पत्रकार के रूप में पत्रों में पाठक, समाज, राष्ट्र मानवता तथा समुदाय के हित, कल् तथा मंगल की भावना को देखते है। हिन्दी - पत्रकारिता का जन्म श्री युगल किशोर शुक्ल द्वारा सम्पा 'उदन्तमार्तण्ड 'से होता है और इसका विकासक्रम भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद से होता हुआ आज और अभी तक विद्यमान है तथा आगे बढ़ रहा है और बढ़ता ही चला

जाएगा। इस विकासक्रम में पत्रकार के क्षेत्र में अनेक प्रयोग होते रहे हैं, इस विकासक्रम की श्रृंखला में एक अद्भूत और अनुपम नाम 'सरस्वती '।

इस मासिक पत्रिका का प्रकाशन इलाहाबाद से सन् 1900 ई के जनवरी मास में प्रारम्भ हुआ था। 32 पृष्ठ की क्राउन आकार की इस पत्रिका का मूल्य चार आना मात्र था। इसके सम्पादक थे जगन्नाथ दास, श्याम सुन्दर दास, धाकृष्ण दास, कार्षिक प्रमाद किशोरी लाल दूसरे वर्ष केवल श्यामसुन्दर दास ही सम्पादक रहे। 1903 ई. में महावीर प्रसाद द्विवेदी इसके सम्पादक हुए और 1920 ई. तक रहे।

'सरस्वती 'हिन्दी की पहली सर्वगुण सम्पन्न प्रतिनिधि पत्रिका रही है। व्याकरण और भाषा की समस्याओं पर उसमें टिप्पणियों छपती रही है। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इसमें प्रकाशित सम्पूर्ण साहित्य विधा को व्याकरण और भाषा की दृष्टि से संतुलित किया और काव्य तथा गद्य में इतिवृतात्मकता को प्रश्रय दिया। उनके द्वारा कई साहित्यकारों को प्रोत्साहन मिला। इस पत्रिका के माध्यम से हिन्दी के कई प्रसिद्ध लेखक और ऋषि सामने आए मैथिलीशरण गुप्त राय देवी प्रसाद, पूर्ण, काशी प्रसाद जायसवाल, विश्वम्बरनाथ कौशिक, गणेश शंकर विद्यार्थी प्रेमचन्द, चन्द्रवर शर्मा गुलेरी सुमित्रानंदन पंत आदि इसके प्रमुख लेखक एवं कवि थे।

'सरस्वती 'में हिन्दी को प्रथम मौलिक कहानी 'दुलाईवालों '1907 ई. में छपी थो (भाग 8 से 5)। संस्कृति, साहित्य, साहित्यकार एवं विदेशी माहित्य का परिचय इसी पत्रिका के द्वारा कराया गया। इस दृष्टि से -इसका ऐतिहासिक महत्व है। इस अकेली पत्रिका ने हिन्दी भाषा की उन्नति के लिए जितना कार्य किया, वह फिर बाद में पंत्रिकाओं द्वारा न हो सका। 'सरस्वती 'के लिए द्विवेदी जी द्वारा संशोधित लेखों की पाण्डुलिपियाँ, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भारत कला भवन में अब भी सुरक्षित है।

उपर्युक्त उद्धरण हिन्दी की प्रसिद्ध पत्रिका"सरस्वती"के सम्बन्ध में है। इससे पूर्णत: स्पष्ट हो जाता है कि 'सरस्वती 'के संपादन कार्य में अल्पकालीन रूप से अन्य संपादक भी रहे।

"सरस्वती"नामकरण विद्या, शिक्षा, ज्ञान और विवेक की देवी 'सरस्वती 'के नाम पर आधारित है। इसके प्रधान सम्पादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी थे। द्विवेदी जी की सरस्वती के सम्बन्ध में हमारे हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध आलोचक, समालोचक, समीक्षक तथा विद्वान एक स्वर से और मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए नजर आते है

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत ने आचार्य द्विवेदी जी और सरस्वती से संबंधित अपने संस्मरणात्मक निर्बंध में लिखा है कि"उसी के मोहक स्वर से आकर्षित होकर मैंने तब 'गिरजे का घंटा 'शीर्ष एक छोटी - सी कविता लिखी थी मै सम्भवतः तब आठवी कक्षा में था। वह कविता अच्छी लगी तो मैंने उसे नीले रंग के रूलदार लेटर पेपर में उतारकर चिरगाँव श्री गुप्तजी के पास भेजा दिया गुप्त जी की ख्याति तब 'सरस्वती के माध्यम से एवं उनकी प्रसिद्ध पुस्तक भारत भारती ', 'जयद्रथ वध आदि से देशभर में फैल चुकी थी। मेरी रचना के हाशिए में श्री गप्तजी ने अपने सहज सौजन्य के कारण प्रशंसा के दो शब्द लिखकर उसे मेरे पास लौटा दिया। गुप्तजी के आशीर्वाद से प्रोत्साहित होकर मैने अपनी वह रचना 'सरस्वती 'में प्रकाशनार्थ भेजा। एक ही सप्ताह के भीतर द्विवेदी जी ने गुप्त जी के हस्ताक्षरों के नीचे बारीक अक्षरों में अस्वीकृत म ... लिखकर लौटा दी।"'सरस्वती 'निःसंदेह तब हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ और उच्चकोटि की मासिक पत्रिका थी और गुप्त जी का सहज, सुलभ प्रशंसा पत्र प्राप्त कर लेने पर भी मेरी रचना तब नि: संदेह अत्यन्त अपरिपक् रही होगी।"छायाबाद युग के प्रकाश स्तम्भ का यह उद्गार 'आचार्य द्विवेदी और सरस्वती 'की श्रेष्ठता को उजागर में लिखते हैं कि 'सरस्वती 'अपनो सजधज और सन्दर सामग्री के लिए हिन्दी संसार में आदर पा रही थी।

"आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का मूल्यवान योगदान हिन्दी भाषा साहित्य और पत्रकारिता के लिए बिल्कुल ही निर्विवाद है। एक स्वर तथा मुक्तकण्ठ से हिन्दी के अधिकांश विद्वान, लेखक, समीक्षक, आलोचक तथा समालोचक इस तथ्य को स्वीकार करते हुए प्रशंसा करते हैं कि द्विवेदी जी पत्रकारिता तथा साहित्य साध उना में भाषा और व्याकरण पर विशेष रूप से ध्यान देते थे। भाषा की अशुद्धि को वह सहन नहीं कर पाते है। ये हमेशा 'सरस्वती 'में प्रकाशनार्थ आनेवाले रचनाओं की भाषा और व्याकरण की दृष्टि से संशोधन और परिमार्जन करते रहते थे। व्याकरण के अनुशासन से अनुशासित रचनाओं को ही अपनी पत्रिका में प्रकाशन के मित स्थान देते थे। जो भाषा और व्याकरण से अनुशासित नहीं रहती थी उन्हें व्याकरणशास्त्र के अनुशासन नियमों से पहले अनुशासित करते थे। उसके बाद ही उसे प्रकाशित करते थे। जो रचनाएं संशोधन तथा परिमार्जन के योग्य भी नहीं रह जाती थी उन्हें अस्वीकृत कर देते थे।

'एक संक्षिप्त जीवन परिचय 'शीर्षक निर्बंध में डॉ ० रामजन्म शर्मा लिखते है"उन्हें हिन्दी भाषा एवं साहित्य से विशेष प्रेम था। वह नए लेखकों के साथ पुराने लेखकों की भाषा में भी सुधार किया करते थे। कठिन से कठिन विषय को भी वे सरल ढंग से प्रस्तुत करने में सक्षम थे।

आचार्य द्विवेदी जी की भाषा परिष्कार संबंधी बातों का उल्लेख करते हुए लेखक श्री एस लिखते हैं-"हिन्दी भाषा का रूप आचार्यजी के साहित्य क्षेत्र में आने के पहले बड़ा अनिश्चित था उसमें बड़े - बड़े साहित्यिक लेखक व्याकरण की भूल करते थे। कोई नियम न था कोई नियंत्रण न था। अराजकता चल रही थी। जिसने जैसे चाहा भाषा से मनमानी की द्विवेदी जी को लेखकों की यह निरंकुशता असहाय हो उठी। उन्होंने देखा कि यह लक्षण जीवित और समुन्नत भाषा के न थे। अतएव उन्होंने समय - समय पर बड़ी निर्भीकता के साथ भूलों को अपने लेखों से दिखाया और एक कुशल शिल्पी की भाँति भाषा को सुंदर और परिमार्जित रूप दिया।"

आचार्य जी की भाषा संबंधी सावधानी का प्रतिपादन करते हुए विद्वान विचारक डा ० कैलाशचन्द्र भाटिया कहते हैं-"भाषा संशोधन के संबंध में आचार्य द्विवेदी की 'सरस्वती 'के लिए तैयार की गई पांडुलिपियाँ महत्वपूर्ण हैं जिनकी ओर स्वयं आचार्य ने श्याम सुंदर दास जी को एक पत्र में संकेत किया था"मेरे समय की सरस्वती की 17 वर्ष की हस्तलिखित कॉपियों मेरे पास है। किसी समय भविष्य में वे शायद मूल्यवान समझी जाएँ। उनको देखने से पता लगेगा कि आज कल के हिंदी के अनेक धुरंधर लेखक किस तरह राह पर लाए गए थे। वे भी दे डालूँगा। सभा चाहे तो जिल्द बांध कर रख छोड़े"।

भाषा में वर्तनी संबंधी संशोधनों पर विचार प्रकट करते हुए श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी जी ने कहा है कि"पत्रकार को रचना भी करनी पड़ती है और कभी - कभी पुनर्रचना के लिए विध्वंस भी। श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी भाषा की वर्तनी और व्यवहार में एकरूपता चाहते थे और उन्होंने एक लेख लिखा भाषा और व्याकरण 'इस लेख से हिन्दी जगत में खलबली मची लेख लिखा गया था प्रयाग में लेकिन उसका उत्तर दिया 'भारतमित्र 'के बेलौस सम्पादक और प्रवाहमान शैली के समर्थ लेखक श्री बालमुकुन्द गुप्त में उन्होंने एक लेखमाला ही लिख डाली, जिसे उन्होंने 'आत्माराम 'के नाम से लिखा। इसके उत्तर में कलकत्ता के ही आचार्य गोबिन्द नारायण मिश्र ने 'हिन्दी बंगवासी 'में 'आत्माराम 'की रेटे, नाम से एक दूसरी लेखमाला लिखी और यह विवाद यहा प्रसिद्ध हो गया।

यह विवाद इसलिए बढ़ गया कि द्विवेदी जी भाषा की अशुद्धियों पर ध्यान देने की बातें करते थे। परन्तु अन्य सम्पादको पत्रों में व्याकरण संबंधी अशुद्धियों की भरमार रहती थी द्विवेदी जी के परामर्श से उन्हें अपनी प्रतिष्ठा पर आघात सा लगा।

डॉ ० विजयेन्द्र स्नातक ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक हिन्दी साहित्य का इतिहास में द्विवेदी जी के द्वारा"भाषा और व्याकरण 'संबंधी पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनाये गए सुधारों की चर्चा करते हुए लिखा है-"सन 1903 में महावीर 93 द्विवेदी ने 'सरस्वती 'के सम्पादन का दायित्व ग्रहण किया और इस माध्यम से उन्होंने अपने सिद्धांतों एवं विचारों को हिन्दी पाठकों के समक्ष योग्यता और दृढ़ता के साथ प्रस्तुत किया। उन्होंने नवोदित कवियों का ऐसा वर्ग तैयार किया जो निरन्तर द्विवेदी जी के सिद्धान्तों पर चलता हुआ भाषा का प्रयोग करता था।"

प्रख्यात पत्रकार तथा लेखक श्री जयप्रकाश भारती अपने आलेख 'युग निर्माता पत्रकार 'में द्विवेदी जी के परिमार्जन तथा परिष्कार संबंधी कार्यों की प्रशंसा करते हुए लिखते है-"शुरू में द्विवेदी जी को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। वह बड़े स्वाभिमानी थे और किसी की भी आलोचना करने में कभी कोई 'मुरब्बत 'नहीं दिखाते थे। अपने सम - वयस्कों में वह लोकप्रिय नहीं थे द्विवेदी जो के सम्पादक बनने पर बहुत से पुराने लेखकों ने लेख भेजने बंद कर दिए। आरम्भ के दो वर्षों में तो अधिकांश लेख द्विवेदी जी को स्वयं लिखने पड़े।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी अपने 'द्विवेदी - युग 'के लिए गुरू प्रेरक और मार्गदर्शक है। गुरू, प्रेरक और मार्गदर्शक इस आशय से कि वे अनगिनत नये रचनाकारों के लिए प्रेरणा स्त्रोत रहे।

हिन्दी के प्रसिद्ध विद्धान और विचारक श्री बनारसी दास चतुर्वेदी जी ने अपने निबंध 'द्विवेदी युग में पत्रकारिता 'में स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है"द्विवेदी युग में जो वाद - विवाद चले, वे अब इतिहास की वस्तु हो गए है। द्विवेदी जी ने अनेक लेखकों और कवियों का निर्माण किया था उसमें से कई आगे चलकर यशस्वी पत्रकार और सम्पादक बने राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, गया प्रसाद शुक्ल 'स्नेही ', रूपनारायण जी पांडेय, पं. रामनरेश त्रिपाठी और ठाकुर गोपालशरण सिंह इत्यादि को द्विवेदी जी ही प्रकाश में लाये।

उक्त विचार है द्विवेदी जी के प्रति प्रसिद्ध विद्वान श्री बनारसी चतुर्वेदी जी के, जिन्होंने अपने अंतिम निष्कर्ष में कहा वह हिन्दी जगत में अद्वितीय है।"

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी को एक परामर्शदाता के रूप में प्रतिष्ठित करते हुए डॉ ० विजयेन्द्र स्नातक कहते है।"महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रयत्नों से खड़ी बोली के परिनिष्ठित रूप की स्थापना हुई। खड़ी बोली हिन्दी गद्य के लिए तो भारतेन्दु युग में ही स्वीकृत हो गयी थी, किन्तु पद्य के क्षेत्र में द्विवेदी जी के अथक प्रयास से उसे सुव्यवस्थित स्थान प्राप्त हुआ। द्विवेदी युग की यह भाषापरक सर्वोच्च उपलब्धि थी।"इससे यह आशय निकलता है कि द्विवेदी जी के परामर्श से नए कवियों ने खड़ी बोली और परिष्कृत भाषा में अपनी रचना की। इस तरह उनके परामर्श का उनके युग में प्रभावी अनुकरण होता था।

आचार्य द्विवेदी का अवदान है - संपादन और पत्रकारिता 'नामक आलेख में डा. बी. आर. धर्मेन्द्र लिखते के है -"द्विवेदी जी ने लेखकों और कवियों की पीढ़ी तैयार की। पत्रकारिता के क्षितिज पर और भाषा तथा साहित्य क्षितिज पर उन्होंने हिन्दी का ऐसा ध्वज फहराया कि समूचा देश कृतज्ञतापूर्वक उस ध्वज को शीश नवाता है।"

उपयुक्त विवेचन से यही निकलता है कि आचार्य द्विवेदी जी अनेक नए लेखकों का निर्माण, करने में सक्षम थे। द्विवेदी जी स्वयं तो पत्रकार और साहित्यकार थे ही, वे पत्रकारों और साहित्यकारों के निर्माता भी थे। उन्होंने अनेक कवियों, साहित्यकारों तथा पत्रकारों का निर्माण अपनी पत्रकारिता के माध्यम से किया जबकि अपने पीछे चलनेवालों की खोज - खबर दुनिया के कम लोग ही ले पाते हैं।

संदर्भ सूची

[1] हिन्दी साहित्य कांश: खण्ड ॥. सम्पादक डॉ. धीरेन्द्र वर्मा (प्रधान)प्रकाशक ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी (उ.प्र.)।

[2] आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, सम्पादक रामेश्वर उपाध्याय, प्रकाशक प्रकाशन विभाग

[3] आचार्य द्विवेदी साहित्य और पत्रकारिता के सरोकार, सम्पादक - डॉ. बी.आर. धर्मेन्द्र प्रकाशक इरावती पब्लिकेशन नई दिल्ली- 18

[4] हिन्दी साहित्य का इतिहास - लेखक डॉ. विजयेन्द्र सनातक।

[5] पत्रकारिता के कीर्तिमान लेखक जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी प्रकाशक - साहित्य संगम इलाहाबाद (उ.प्र.)।